Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 11 ~ Issue 8 (2023) pp: 144-156
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

नई वैश्विक व्यवस्था व भारत-रुस के मध्य बदलते संबंध

डॉ सीमा दास और डॉ सुजीत ठाकुर
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दू कॉलेज व दयाल सिंह कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रमुख महत्वपूर्ण शब्दावली:

बदलती विश्व व्यवस्था और भारत-रूस संबंध, सोवियत संघ का अंत और भारत-रूस संबंधों में बदलाव, शीतयुद्ध का अंत और रूस की नई विदेश नीति, भारत-रूस के मध्य राजनीतिक, सामरिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व अन्य क्षेत्रों के बीच द्विपक्षीय संबंध

R**eceived 04 August, 2023; **R**evised 15 August, 2023; **A**ccepted 17 August, 2023 © The author(s) 2023. **P**ublished with open access at **www.questjournals.org

प्रस्तावना:
सोवियत संघ के बिखराव के साथ ही 'अमेरिका-सोवियत संघ संबंध' नई विश्व व्यवस्था मे महत्वपूर्ण नही रहें। उत्तर शीतयुद्ध काल में वैचारिक व सैन्य प्रतिस्पर्धा अपना महत्व खो चुकी थी। विश्व व्यापार संगठन, विश्व बैंक, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, उत्तर अटलांटिक संधि समझौते जैसी संस्थाये पुनः महत्वपूर्ण हो चुकी थी। वारसा पैक्ट, कॉमेकंन, विश्व समाजवाद जैसी संकल्पना जो द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद विश्व व्यवस्था की धुरी थी और 'साम्यवाद व पूंजीवाद का अवरोधन' का आधार होने के साथ साथ अन्तराष्ट्रीय संबंधों के संचालन का महत्वपूर्ण कारक थी, अब इतिहास बन चुकी थी।

रूस के राष्ट्रीय व वैदेशिक नीति नियंता एक ऐसी व्यवस्था की ओर देख रहे थे जो द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद फ्रांस और ब्रिटेन (जो उस दौर की दो वैश्विक महाशक्तियां थी) मे आई आर्थिक महामारी से जिस प्रकार अमेरिका जैसे मित्र राष्ट्र ने 'मार्शल प्लान' के द्वारा इनका आर्थिक पुनिर्माण मे मदद की थी, उसी प्रकार की खोज नवोदित रूस अपने पुराने मित्र राष्ट्रों से कर रहा था। लेकिन किसी में यह क्षमता नही थी कि वो अमेरिका की तरह उसे सहायता कर सकें।भारत में तो ये कदापि नही थी। स्वभावतः रूस अपनी खोई हुई अंतरराष्ट्रीय सर्वोच्चता व बिखरी हुई राजनीतिक व आर्थिक व्यवस्था के लिये पश्चिम की ओर देख रहा था। रूस के नीति निर्धारकों को लग रहा था की उसकी तत्कालीन हालात का यदि कोई मुख्य कारक हैं तो वह उसके समाजवादी व गैर समाजवादी मित्र राष्ट्र हैं, जिनकी रूस के ऊपर अतिनिर्भरता ने रूस को इस स्तिथि में खड़ा कर दिया है। भारत भी उन मित्र राष्ट्रों मे एक था, अतः नई रूस की वैदेशिक नीति की प्राथमिकताओं मे भारत व उसके जैसे अन्य सहयोगी राष्ट्रों का स्थान सबसे अंत या अंत से दूसरे नंबर पर था।

भारत स्वयं भी आर्थिक व राजनीतिक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा था। सोवियत संघ जैसे सबसे बड़े व्यापारिक व अंतरराष्ट्रीय साझेदार के बिखराव से भारत वैश्विक व्यवस्था मे कुछ समय के लिए मित्र विहीन हो चुका था।

भारत अपनी वैदेशिक नीति को नई विश्व व्यवस्था मे समायोजित करने का प्रयास कर रहा था। भारत की वैदेशिक नीति का आधार जहाँ निरन्तरता के साथ सामयिक परिवर्तन था, वही रूस की वैदेशिक नीति व्यवहारिकता व समसामयिकता से संचालित थी, जिसमे पूर्ववर्ती नीतियों से दूरी बनाने का दृष्टिकोण ज्यादा प्रभावी था। रूस के नेतृत्व को यह समझने में देरी नही लगी थी कि चाहे पूर्वी यूरोप के मित्र राष्ट्र हों ,या अफ्रीका, एशिया व लैटिन अमेरिका के सहयोगी राष्ट्र; उसकी समस्या का समाधान नही कर सकतें। अतः जब नवोदित रूस की वैदेशिक नीति का पहला प्रारूप विश्व पटल पर आया तो अमेरिका सहित पश्चिमी राष्ट्र प्राथमिकताओं की सूची मे अग्रणी थे। यहाँ तक की चीन, जो पूर्व सोवियत काल मे वैचारिक व सामरिक प्रतिद्वंद्वी था, वह भी भारत जैसे राष्ट्रों से प्राथमिकता सूची मे आगे था। इस सच्चाई को स्वीकार करते हुए भी भारत की विदेश नीति मे रूस के प्रति विशेषकर 1990 के दशकों मे विशेष परिवर्तन देखने को नही मिला। बिखरती रुस की सैन्य उत्पादन व आर्थिक क्षमता के बावजूद वैश्विक स्तर पर भारत रूस के सैन्य उत्पादक सामग्रियों का सबसे बड़ा आयातक देश बना रहा। इन्ही आधारभूत वैश्विक व राष्ट्रीय परिवर्तनो के आधार पर वर्तमान विश्व व्यवस्था मे भारत-रूस संबंधों की नीव पुनः स्थापित होती है, जिसका आधार 1992 में रूस के गृह मंत्री के भारत दौरे पर आने पर ये कहना था कि भारत-रूस संबंधों का आधार 'आध्यात्मिक व्यवहारवाद' है; वास्तव में यह उस दौर मे असम्भव प्रतीत हो रहा था, जब भारत-रूस संबंध पुराने ढंग से ही संचालित हो रहे थे । इस दौरे की तार्किक परिणति 2019 में 'भारत-रूस विशिष्ट व विशेषाधिकार संधि' से होता है। यद्यपि पुरानी वैचारिक साम्यता व आर्थिक निर्भरता का दौर वर्तमान भारत-रूस संबंधों का आधार तो नही रहा, फिर भी सैन्य रक्षा उत्पाद, हाइड्रोकार्बन ऊर्जा का विस्तार, स्पेस टेक्नोलॉजी, बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के प्रति समान राय जैसे कई कारक है जो भारत-रूस संबंधों को नया आयाम दे रहे हैं।

नई वैश्विक व्यवस्था मे भारत-रूस सम्बंध:

भारत ओर रूस दोनों ने उत्तर शीत युद्धोंतर विश्व व्यवस्था को स्वीकार करते हुए अपनी वैदेशिक नीति मे आमूलचूल परिवर्तन किया। जैसा की पहले भी कहा गया है की भारत की विदेशनीति के लक्ष्य और नीतियों मे कोई मौलिक परिवर्तन देखने को नही मिला। हाँ, उभरती विश्व व्यवस्था में अपने आप को स्थापित करने की प्रेरणा ने भारतीय विदेश नीति को नई दिशा अवश्य दी; जैसे की भारत को अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था मे उचित स्थान प्राप्त हो, पश्चिमी राष्ट्रों के साथ एक अविश्वास का जो वातावरण था, उसे सकारात्मकता में बदला जाय, विदेश नीति मे आदर्श व वैचारिक आग्रह की जगह व्यवहारिकता और राष्ट्रीय हित को अधिक महत्ता दी जाय, सयुंक्त राष्ट्र के पाँच स्थाई सदस्यों के साथ बेहतर तालमेल हो, दक्षिण एशिया से आगे बढ़ते हुए दक्षिण पूर्व एशिया की ओर विदेश नीति को आगे बढाया जाये। ऐसा नही था की पहले की विदेश नीति में व्यवहारिकता का अभाव था और आदर्श ही आदर्श थे। गुटनिरपेक्षता की नीति भी व्यावहारिकता पर ही आधारित थी। तत्कालीन सोच जो वैश्विक व्यवस्था को द्विध्रुवीय आधार पर विभाजित की हुई थी और संबंधों का आधार वैचारिक, राजनीतिक व आर्थिक व्यवस्था थी, उससे न केवल स्वयं को अपितु अन्य नवोदित एशिया, अफ्रीका, व लैटिन अमेरिकी राष्ट्रों को भी एक विकल्प प्रदान करने की कोशिश ही गुटनिरपेक्षता थी। यद्यपि इस विकल्प पर समय समय पर प्रश्नचिन्ह उठते रहे हैं। लेकिन जो मूलभूत भरतीय वैदेशिक नीति के तत्व थें, उसमे कोई बदलाव नही हुआ। जैसे, राष्ट्रीय नीति निर्माण व निर्णय की स्वतंत्रता कायम रखना, आर्थिक स्वावलंबन को बढ़ावा देना जो अब आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य मे बदल गया है।वैश्विक निःशस्त्रीकरण का समर्थन व अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं का सहयोग व समर्थन उस दौर में भी भारत की विदेश नीति का लक्ष्य रहा और आज भी है। द्विध्रुवीय विश्व व्यवस्था के अंत के साथ ही गुटनिरपेक्षता की नीति पर प्रश्न जरूर उठने लगे। इस बात से भी इनकार नही किया जा सकता कि व्यावहारिक स्तर पर गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की प्रासंगिकता समय के साथ खोती जा रही है। फिर भी सैद्धांतिक स्तर पर भारत मे चाहें दक्षिणपंथ पर आधारित सरकार हो या उदारवादी, दोनो गुटनिरपेक्षता को वैश्वीकरण के दौर में ज्यादा उपयोगी एव प्रासंगिक मानती रही हैं।यह तर्क यह दिया जाता है कि भूमंडलीकरण

*Corresponding Author: **डॉ सीमा दास**

के दौर में जहाँ हर राष्ट्र कर्ज के बोझ में डूब रहा है, विसंगतिपूर्ण व्यापारिक नीति को प्रोत्साहित किया जा रहा है, वैदेशिक अनुदान कम होतें जा रहे है, अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं मे निर्णय निर्माण प्रक्रिया मे लोकतांत्रिक प्रक्रिया कम होती जा रहीं है, ऐसी वैश्विक परिस्थितियों में गुटनिरपेक्षता की प्रासंगिकता विशेष है। फिर भी सिद्धान्त और व्यवहार मे अंतर देखने को मिला है।ऐसा भी नही कहा जा सकता की भारत, रूस मे हो रहे राजनीतिक व आर्थिक नीति के बदलाव से अपरिचित था। हाँ, इतना जरूर कहा जा सकता है की रूस नए अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों के अनुसार अपनी विदेश नीति का बदलाव तेज गति से कर रहा था। भारत की विदेश नीति को न तो रूस की तरह अपने वैश्विक सोच मे इतना बदलाव की आवश्यकता थी और न ही परिस्थितियां अनुकूल थी।भारत पिछले तीन दशकों से रक्षा, सैन्य व सामरिक सहायता के लिए रूस पर अति निर्भर था। एकाएक सोवियत संघ का पतन से उसके चार दशकों से चले आ रहे रक्षा व सैन्य उत्पाद की आत्मनिर्भरता व उस उत्पादों की विविधता की असफलता का परिचायक था। भारत न चाहते हुए भी रूस की बिखरती सैन्य उत्पादन क्षमता के बावजूद अपने रक्षा उपकरणों व अतिरिक्त सामग्री के लिए रूस पर निर्भर रहा। रूस ने प्रारंभिक दशकों मे ही यह स्पष्ट कर दिया था कि रूस की विदेश नीति की प्राथमिकताएं, स्वतंत्र राष्ट्रों के राष्ट्रमंडल देशों(CIS) का नेतृत्व करना और उन राष्ट्रों के संरक्षक राष्ट्र के रूप में विश्व व्यवस्था में अपने को स्थापित करने की होगी। साथ मे अंतरराष्ट्रीय शान्ति और सहयोग को बढ़ावा देना और बिना किसी वैचारिक पूर्वाग्रह के अन्य राष्ट्रों के साथ संबंध को आगे बढ़ाने की नीति उसके विदेश नीति के तत्व होंगे। रूस अपने निकटतम राष्ट्रों व अमेरिका व अन्य पश्चिमी राष्ट्रों के साथ और बेहतर संबंध स्थापित करके, संयुक्त राष्ट्र संघ मे अपने स्थाई सदस्यता का उपयोग रूस अपने राष्ट्रीय हितों की वृद्धि के लिए करेगा। यहां एक बात रूस की विदेश नीति में बड़ी स्पष्टता से रखी गई थी कि पश्चिमी देशों के साथ संबद्धता को बेहतर बनाने का पूरा प्रयास होगा, लेकिन यह रूस के राष्ट्रीय हितों के मूल्य पर नही होगा। यही कारण रहा कि जब रूस के राष्ट्रीय हित, पश्चिमी देशों के सामरिक हितों से टकराये तो रूस की विदेश नीति मे प्रिमकोव युग से एक संतुलन देखने को मिला। उपरोक्त रूसी विदेश नीति से स्पष्ट था की भारत जैसे राष्ट्र जो स्वयं ही अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी जगह तलाश रहा था, रूस की विदेश नीति की प्राथमिकता सूची मे नही था। लेकिन रूस का पश्चिम के साथ जो अपनापन विकसित हुआ था, उसे टकराहट में बदलते देर नही हुई, और वही प्रस्थान बिंदु है जहाँ से रूस की विदेश नीति में एक संतुलन दिखना शुरू हुआ। लेकिन वो संतुलन जो 1960 के दशक के बाद देखने को मिला था, वो पुनः स्थापित हो इसकी परिकल्पना करना वर्तमान विश्व राजनीति मे अप्रासंगिक प्रतीत होता है। फिर भी अंतरराष्ट्रीय राजनीति के यथार्थवादी सिद्धांत की मान्यता है की इतिहास अपने आप को दोहराता है। वर्ष 2000 के बाद जो सामरिक व सैन्य सहयोग भारत-रूस संबंधों मे देखने को मिले है, वो संबंधों को नई दिशा तो दे रही है, लेकिन विश्व राजनीतिक संरचना जिसमे आर्थिक संबंध, अन्य संबंधों पर ज्यादा प्रभावी हो रहें है, वहाँ भारत-रूस संबंध कमजोर दिख रहा है। इन्ही संरचनात्मक वैश्विक परिवर्तन के बीच भारत- रूस के राजनीतिक संबंध उत्तर शीतयुद्ध काल में स्थापित होते है, जिसका संक्षिप्त विश्लेषण अगले भाग में किया गया है।

भारत-रूस राजनयिक संबंध;

'अमेरिकी-सोवियत प्रतिद्वंदिता' उत्तरशीतयुद्ध विश्व राजनीति की न तो धुरी रही ओर न ही 'पूंजीवाद व साम्यवाद का अवरोधन' एक वैचारिक आधार। स्वभावत: नए दौर मे गुटनिरपेक्षता और तृतीय विश्व की राजनीति मुख्यधारा से लुप्तप्राय दिखने लगी। चर्चा देखनें को मिली -नए कारकों की, जिसमे विश्व व्यापार संगठन, आर्थिक विनिवेश, भू-आर्थिक महत्ता, जीडीपी ग्रोथ, विदेशी संस्थात्मक निवेश व अन्तरनिर्भर विश्व शामिल थें।वैश्विक व्यवस्था के उपरोक्त सभी नव आधारभूत लक्षण भारत और रूस दोनों के लिए अभिनव थे। एक पश्चिम से अपनी पुरानी कटुता के भाव की सभी कड़ीयों से मुक्त हो अब पूर्ण समर्पण भाव से अपनी नीतियों में संरचनात्मक परिवर्तन कर रहा था। वही दूसरी ओर, भारत भी पश्चिम की ओर ही अपनी आर्थिक

व्यवस्थात्मक परिवर्तन के लिए बातचीत कर किसी तार्किक निर्णय पर पहूँचने की कोशिश कर रहा था। ताकि उभरती राजनीतिक व आर्थिक संकट से तत्परता के साथ निपटा जा सके। ऐसी परिस्थितियों में दो पुराने सहयोगी राष्ट्र भारत व रूस की राजनीतिक संबद्धता की शुरुआत होती है। स्वभावत: एक अनिश्चितता का दौर था। नए राजनीतिक समीकरणों को ज्यादा महत्व दिया जा रहा था। अतः जब संबंधों की शुरुआत हूई तो एक दूरी दिखाई दी। शायद इतनी की जब भारत नवस्वतंत्रत राष्ट्र के रूप मे विश्व मानचित्र पर अवतरित हूआ था और अपनी विदेश नीति के निर्णयों की स्वतंत्रता की नीति को कायम रखते हूए कॉमनवेल्थ ऑफ स्टेट्स की सदस्यता ली थी, जो उस समय के तात्कालिक सोवियत शासक स्टालिन को कतई स्वीकार नही था, उस दौर में भी भारत - रूस संबंध मे इतनी दूरी नही आई थी। यह स्पष्ट था की नवोदित रूस की विदेश नीति में भारत को पुराना स्थान नही था।इसके कई कारण थे, रूस अब भौगोलिक आधार पर एक यूरोपीय देश बन चुका था। भारत और रूस की सीमाओं के बीच अब अफगानिस्तान और पाकिस्तान ही नही, अपितु सोवियत संघ के पूर्व के पांच मुस्लिम राज्य अब स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उभर चुके थे।रूस को अब न केवल तालिबान से बल्कि मध्य एशिया के अपने पूर्व की पांचों इकाइयों के साथ भी एक बेहतर सामरिक और राजनीतिक संबंध कायम रखनें थे। इसके पीछे का कारण था कि रूस के मातहत बचे स्वतंत्रत रिपब्लिक चेचन्या और दतकिस्तान (दोनो मुस्लिम बहूल बचे हूए सोवियत संघ के उत्तराधिकारी राष्ट्र) रूस से अपने आप को अलग करने की लड़ाई लड़ रहे थे।रूस को पाकिस्तान, अफगानिस्तान, व अपने पांच नए पड़ोसियों से अपनी क्षेत्रीय अखंडता को सुरक्षित रखने के लिए भारत से ज्यादा आवश्यकता थी। दूसरी तरफ, राष्ट्रमंडल राष्ट्रो का समूह रूस की विदेश नीति की प्राथमिकता सूची में प्रथम स्थान पर था, कोजयरेव की पश्चिमी नीति उसे भारत से और दूर कर रही थी। अफगानिस्तान सामरिक व वैचारिक रूप से रूस के लिये अब प्रतिष्ठा का विषय नही रहा था। रूस की सामरिक सोच पाकिस्तान को लेकर बदल चुकी थी। सोवियत संघ के अंतिम दौर मे हूए तख्ता पलट पर भारतीय दृष्टिकोण नवोदित रूस के नीति निर्धारकों को उनके राजनीतिक हित के विरुद्ध लगा रहा था।

उपरोक्त परिस्थितियों के बावजूद भारत को लेकर वहाँ के निर्णायक समूहों का एक बहूत बड़ा वर्ग जिसे 'एशिया फर्स्ट'समूह कहा जाता था, इस समूह के तहत रूसी संसद ड्यूमा के निर्वाचित सदस्यों का एक बहूत बड़ा वर्ग, रूस के बाहर और भीतर रह रहे बुद्धिजीवीयों का एक बड़ा समूह व रूसी सभ्रांत समाज का एक तबका शामिल था;इस दबाव समूह का मन्तव्य था कि भारत-सोवियत काल में भारत का जो स्थान था, अब रूस की विदेश नीति में भी वही विशेष स्थान मिलना चाहिए।

'पश्चिमी समूह' जिसकी अगुवाई तत्कालीन विदेश मंत्री कोजयरेव कर रहे थे, वे भारत से विशेष सम्बन्धो को विराम लगा दक्षिण एशिया मे नई वैश्विक परिस्थितियों के मद्देनजर संबंधों के पुननिर्धारण के पक्षधर थे।कोजयरेव की सोच थी की रूस को अपनी विदेश नीति के निर्धारण में विशेषकर दक्षिण एशियाई क्षेत्रों में भारत के चश्में से देखने की आवश्यकता नही है। प्रांरभिक वर्षो में यही दृष्टिकोण प्रभावी रहा। गेनडी बर्बुलिस रूस के राष्ट्रीय नेतृत्व के उच्च पदस्त पहले राजनेता थे जो सोवियत संघ के पतन के बाद मई 1992 में भारत की दौरा पर आये । अपनी भारत यात्रा के दौरान प्रेस वार्ता में यह स्वीकार किया था की यद्यपि परिस्थितियां बदल चुकी है, फिर भी भारत और रूस के संबंध इस क्षेत्र के अन्य देशो के साथ रूस के संबंधों से निश्चित रूप से भिन्न है, जिसे इन्होंने 'आध्यत्मिक व्यवहारवाद' (spiritual pragmatism) की संज्ञा दी।

येल्तसिन का दौरा और पुराने सम्बन्धों का नवीनीकरण:

तत्कालीन रूसी राष्ट्रपति और नवोदित रूस के प्रथम राष्ट्राध्यक्ष, जिनकी चिरप्रतीक्षित भारत यात्रा पूर्व में दो बार निर्धारित होकर भी स्थगित हो गई थी, अंततः 1993 के दिसंबर मे वह भारत के दौरे पर आये। उनके साथ कई ऐसे चुनौतीयां भी आई थी, जिसके कारण भारत -रूस सम्बन्धो मे एक दूरी और अविश्वास कायम हो गया

था। दूसरे शब्दों मे ये कहा जा सकता है की संबंधों के ठहराव को गतिशील करने का प्रयास किया गया। सबसे बड़ी चुनौती थी भारत- रूस व्यापारिक संबंधों को नयी शुरुआत देने की। उसके लिए सोवियत संघ के विखराव के उपरांत रूपये-रूबल की परिवर्तनीयता को लेकर दोनों पक्षो के बीच मतभेद बना हुआ था। साथ ही साथ सोवियत काल की देनदारी को लेकर भी दोनो पक्षों के बीच $4 बिलियन का अंतर था। स्वभावतः व्यापारिक संबंधो का टकराव निश्चित था। रूस का मनना था कि भारत जिस दौर में सोवियत संघ से लेनदारी की थी, उसी दर के आधार पर उसकी देनदारी सुनिश्चित होती है। भारत का मानना था की रूस अपनी सभी पुरानी आर्थिक व राजनीतिक संबंधों को छोड चुका है, और नई वैश्विक आर्थिक नीति के तहत वर्ल्ड बैंक की सदस्यता भी ग्रहण कर चुका है, अतः अब नई राजनीतिक परस्थितियों में रूस को नई अंतरराष्ट्रीय आर्थिक परिवर्तनियता के नियम को ही स्वीकार करना चाहिए। ऐसा नही हो सकता के अपने राजनीतिक और आर्थिक संबंध वैश्विक स्तर पर अपने पूर्व की नीति और वर्तमान नीति को स्वेच्छा पूर्ण तरीके से अपने हित के अनुसार दूसरे देशों पर प्रत्यारोपित किया जाये।रूस भारत के दृष्टिकोण से सहमत नही था।यही एक प्रमुख कारण था की भारत और रूस के बीच व्यापारिक संबंध प्रारंभिक वर्षों में रुके हुए थे।

येल्तसिन के लिए चुनौती थी की रूस के रक्षा उपकरणों के सबसे बड़े खरीददार भारत को अपने पाले में फिर से कैसे लाये।रूस की 1700 से अधिक रक्षा उत्पादक सयंत्र को बाजार की आवश्यकता थी, भारत पूर्व से ही रूसी रक्षा उत्पादनों का बड़ा क्रेता रहा था। चीन नई राजनीतिक व आर्थिक परिस्थितियों के कारण रूस के रक्षा उपकरणों का बड़ा ख़रीददार उभरा था। येल्तसिन के लिए विश्व के इन दो बड़े रक्षा उपकरणों के ख़रीददार को अपनी झोली में रखना विवशता थी, क्योकि बिखरती रक्षा सयंत्र को चलायमान रखने के लिए भारत जैसे ख़रीददार को नाराज नही किया जा सकता था। अतः बीच का रास्ता निकाला गया, देनदारी का आधार भारतीय रुपया ही होगा। रूबल के साथ परिवर्तनीयता को लचीला बनाया गया।निर्णय ये हुआ की 63 प्रतिशत कर्ज 12 साल के अंदर भारत को चुकाना होगा। जिसकी परिवर्तनीयता का आधार 1 रूबल#19.9 रूपया होगा। अर्थात 1 रूबल#20 रुपए के आसपास पर दोनो पक्षों मे सहमति बनी। साथ ही साथ इस पर 2.4 प्रतिशत का ब्याज भी भारत पर देनदारी मे निर्धारित हुआ। बचे हुए 37 प्रतिशत कर्ज के लिए 45 साल की अवधि निर्धारित की गई। जिसकी परिवर्तीयता का आधार 1 रुबल# 3.1 रुपया माना गया। येल्तसिन दौरे की ये सबसे बड़ी सफलता मानी जाती है क्योकि इसके माध्यम से भारत-रूस संबंधों में ठहराव आ गया था, उसे नई ऊर्जा व गति प्राप्त हुई।

दूसरी चुनौती थी, 1971 के भारत रूस मैत्री संधि को नए रूप में स्वीकार करने की। यह वही संधि थी जिसके कारण अमेरिका और सोवियत संघ के नाभिकीय पोत अरब सागर व बंगाल की खाड़ी में एक दूसरे को चुनौती दे रहें थे।इसी सन्धि से चीन के अतिविश्वास को भी नियंत्रित किया जा रहा था। उस संधि की 20 वर्षीय मियाद पूरी हो चुकी थी। रूस की विदेश नीति में दक्षिण एशिया प्राथमिकताओं की सूची में अंतिम पायदान पर संघर्ष कर रहा था। रूस इस संधि को पुनः उसी रूप में आगे बढ़ाने के कतई इच्छुक नहीं था। विश्व राजनीति में अब रूस की पुरानी स्तिथि भी नही रह गई थी। देशों के आपसी संबंधों में संरचनात्मक परिवर्तन हो चुका था। दोनो देशों ने नई विश्व व्यवस्था को स्वीकार करते हुए , इस संधि के नवीनीकरण को भी अपनी सहमति दी। यह संधि पुनः अगले 20 वर्षो के लिए कुछ विशेष प्रावधानों को विलोपित कर कुछ नए प्रावधानों के साथ स्वीकार की गयी। जैसे कि एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के शांति और सुरक्षा पर यदि कोई खतरा देखते है तो आपसी सहमति के द्वारा उसे मिलकर निपटने की शर्त (जो 1971 की भारत- रूस मैत्रीपूर्ण संधि का मुख्य बिंदु था) को हटा दिया गया।नए मैत्रीपूर्ण संधि के तहत यह बात रखी गयी कि भारत और रूस एक दूसरे राष्ट्र के सामरिक हित के विरुद्ध कार्य नही करेंगे।

अन्य मुद्दे जैसे रक्षा उपकरणों के नियमित आपूर्ति, अतिरिक्त पुर्जे, सेवा व उत्पाद की गारंटी, रक्षा उत्पादन के आधुनिकीकरण, क्रायोजेनिक इंजन तकनीक के हस्तांतरण, व कश्मीर पर रूस के बदले दृष्टिकोण पर भी चर्चा

हुई । राष्ट्रपति येल्तसिन ने कश्मीर पर रूस की पुरानी नीति को ही पुनः दोहराया और भारत को आश्वासन दिया की रूस कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग मानता है और मानता रहेगा। भारतीय विदेश नीति नियंताओ के लिये रूसी राष्ट्रपति द्वारा यह कहना काफी संतोषजनक विषय था, क्योकि संयुक्त राष्ट्र मे तत्कालीन परिस्थितियों में कश्मीर मुद्दे पर भारत का कोई पैरोकार नही बचा था। रूस द्वारा कश्मीर पर अपनी पुरानी नीति को ही आगे रखने की बात भारत जो उस दौर मे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मित्र विहीन हो चुका था,उसे तात्कालिक भरोसा आया।

क्रायोजेनिक इंजन के मुद्दे पर यद्यपि रूस भारत के साथ किये समझौते को उस दौर मे क्रियान्वयन अमेरिकी दवाब के कारण नही कर पाया। फिर भी बाद मे जाकर उसकी क्षति पूर्ति संबंधों को बेहतर बनाने के लिये रूस द्वारा किया गया। लेकिन उस दौर मे किये हुए समझौतों को लागू न कर पाना, रूस की गिरती अंतरराष्ट्रीय साख पर और संदेह खड़ा कर रहा था कि क्या रूस अपनी विदेश नीति का स्वतंत्र संचालन करने में सक्षम है अथवा नही?

उपरोक्त स्तिथि के बाबजूद, रुकी हुई भारत-रूस संबंधों को पुनः पटरी पर दौराने का काम राष्ट्रपति येल्तसिन का बहुप्रतीक्षित भारत यात्रा द्वारा सम्पन्न हुआ। भारत-रूस के मध्य सोवियत संघ के विघटन के बाद जो संबंधों में असहजता आ गयी थी, उसे इस दौरे ने बहुत हद तक दूर करने मे सफल रहा। प्रिमकोव के विदेश मंत्री और प्रधानमंत्री काल मे संबंधों मे एक नया विश्वास दिखा। पुतिन युग के शुरुआत के साथ ही संबंधों में एक स्थिरता देखने को मिली।

प्रधानमंत्री राव व चेरनकोव की यात्रा:

प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव की 1994 मे रूस की यात्रा और राष्ट्रपति येल्तसिन के बाद उनके प्रधानमंत्री चेरनकोव की दिसम्बर 1994 व 1995 मे भारत यात्रा ने संबंधों को और आगे बढ़ाने में सहायक हुआ। प्रधानमंत्री रॉव की रूस यात्रा इस अर्थ मे भी ज्यादा प्रासंगिक थी कि 1993 मे रूसी संसद के हुए चुनाव मे राष्ट्रवादी ताकतों को बहुमत प्राप्त हुआ था। परिणामस्वरूप वहाँ 1993 मे एक और तख्ता पलट की कोशिश हुई थी, भारत ने इस बार वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था के प्रति विश्वास जताया। स्वभावत: पूर्व मे भारत द्वारा सोवियत व्यवस्था के समर्थन के कारण जो अविश्वास उत्पन्न हो गया था, उसे प्रधानमंत्री रॉव ने जड़ से खत्म कर दिया। नाटो के पूर्वी यूरोप की तरफ बढ़ती दिलचस्पी रूस के सामरिक व राष्ट्रीय हित के विरूद्ध थी।अतः वहाँ माँग बढ़ रही थी पश्चिम के साथ संबंधों मे सन्तुलन स्थापित किया जाये। रॉव की यात्रा ने न केवल शिथिल संबंधों को गतिशीलता प्रदान किया अपितु इस दौरे पर भारत रूस के बीच ' मास्को घोषणा' पत्र पर हस्ताक्षर हुए जिसका मुख्य उद्देश्य 'बहुलवादी राज्यो के हितों के संरक्षण' को लेकर था। भारत और रूस दोनो बहुप्रजातीय देश है, पृथक्करण की मांग बीच-बीच मे कुछ क्षेत्रों से उठते रहते है। आत्मनिर्णय के नाम पर पश्चिमी शक्तियों द्वारा परोक्ष व प्रत्यक्ष समर्थन ऐसे ताकतों को मिलता रहा है।अतः उस दौर की चुनौती से निपटने के लिए भारत-रूस द्वारा मॉस्को घोषणा पत्र एक साझा पहल था। इसके साथ ही, भारत द्वारा रूस के कर्ज की भुगतान के लिए एक साझे कोष का निर्माण किया गया। रक्षा सौदों के संबंधों में 'खरीददार और विक्रयकर्ता' से आगे बढ़ते हुए इसे 'सहभागिता व समन्वयता' के रूप मे परवर्तित किया गया।

रूसी प्रधानमंत्री चरनोवदिन की भारत यात्रा के दौरान 'भारत-रूस साझेदारी' की बात कही गई और साथ ही साथ भारत को दक्षिण एशिया क्षेत्र का 'सबसे अच्छा साथी' की संज्ञा दी गई। 1990 के मध्य आते आते यह स्पष्ट होने लगा था कि रूस की विदेश नीति के नियंताओ ने भारत के प्रति अपने दृष्टिकोण को ओर सकारात्मक रूख अपना लिया था।यद्यपि व्यवहारिक रूप में यह भाव येल्तसिन के पूरे कार्यकाल में बहुत कम ही देखने को मिला। भारत के नीति नियंताओ ने जो 20वी शताब्दी के अंत तक रक्षा उपकरणों के लिए रूस पर अपनी निर्भरता को

कम नही किया था, ने अब परिवर्तनीयता पर बल देना प्रारंभ कर दिया, जिसका परिणाम 2018 मे अमेरिका के भारत के रक्षा उपकरणों को सबसे बड़े विक्रेता होने के रूप में सामने आया।

एवगेनी प्रिमकोव का काल;

अन्द्री कोजयरेव जो 1990-96 तक रूस के विदेश मंत्री रहे और अपने पूरे कार्यकाल मे उन्होंने एक बार भी स्वंत्रत रूप से विदेश मंत्री के रूप में भारत का दौरा नही किया, यह स्पष्ट संकेत था की कोजयरेव भारत के साथ संबंधों को लेकर गंभीर नही थे। वो भारत की जगह पाकिस्तान को प्राथमिकता देना चाहते थे, लेकिन 'एशिया समूह' का ड्यूमा में भारत समर्थन, उन्हें चाहते हुए भी ऐसा करने से रोके रखा। कोजयरेव की जगह प्रिमकोव के आते ही भारत-रूस संबंधों मे एक नई गतिशीलता देखने को मिली। प्रिमकोव ने अपने भारत यात्रा के दौरान भारत को 'प्राथमिकता वाला साथी' (priority partner) और एक वैश्विक शक्ति कहा। भारत-रूस आतंकवाद से लड़ने की लड़ाई मे एक साथ खड़े है,यह स्पष्ट संकेत पाकिस्तान की तरफ था की की यदि पाकिस्तान रूस से दोस्ती चाहता है तो आंतकवाद को समर्थन देना बंद करे।

रूस की विदेश नीति मे 1993 के बाद जो एक परिवर्तन के संकेत दिख रहे थे, उसकी स्पष्ट झलक प्रिमकोव काल मे दिखा।पश्चिम के साथ संबंधों को संतुलन पर बल दिया गया और एशिया के शक्तिशाली राष्ट्रों के साथ संबंधों को ओर सुदृढ़ करने की बात कही गई।

पहली बार रूस की अर्थव्यवस्था 1990-96 के नकारात्मक ग्रोथ से निकलकर 1997 के वित्तीय वर्ष मे सकारात्मक वृद्धि दर्ज की थी। लग रहा था रूस अपने आर्थिक, राजनीतिक अस्थिरता के दौर से निकलने के दरवाजे पर खड़ा है। लेकिन 1998 के आर्थिक संकट ने पुनः रूस को अपने पुराने दौर में ला दिया था। रूस को लगने लगा था की पश्चिम का द्वार उसके आर्थिक संकट का हल नही है, उसे अपने अर्थ व राजनीतिक नीति मे बदलाव की आवश्यकता है। प्रिमकोव का विदेश मंत्री काल से ही रूस की विदेश नीति में एक संतुलन दिखने लगा था। इसी बीच भारत द्वारा पोखरन द्वितीय का परीक्षण किया गया। जिसकी विश्वव्यापी निंदा हुई। विश्व समुदाय ने इसे अनावश्यक नाभकीय प्रसार कहा और दक्षिण एशिया में नाभकीय अस्त्रों की होड़ को बढ़ाने वाला कदम बताया।

रूसी नीति नियंता भी जो भारत के साथ एक बेहतर संबंधो की परिकल्पना कर रहे थे, असमंजस की स्तिथि पर आ खड़े हुए।रूस की नीति नाभकीय प्रसार के संबंध में स्पष्ट थी, वह 'नाभकीय क्षत्रिय' वाले पांच देशों के अलावा अन्य किसी देश को इसमें स्थान देने के पक्षधर नही था; चाहे उसका सबसे बड़ा हथियार क्रेता देश भारत ही क्यो न हो।अतः रूस की आधिकारिक वक्तव्य मे कहा गया की भारत द्वारा नाभिकीय परीक्षण निराशाजनक है और रूस ये मानता है की रूस के नाभिकीय सहयोग की नीति को भारत ने अंतरराष्ट्रीय सीमाओं के तहत नही लिया है। रूस ये अपेक्षा करता हैं कि भारत नाभिकीय शक्ति बनने के अपने हठ को त्याग दे, और अंतरराष्ट्रीय समुदाय के साथ सहयोग करें। लेकिन अंतरराष्ट्रीय समुदाय के द्वारा भारत पर लगे प्रतिबंधो से रूस ने अपने आप को अलग रखा।रूस ने अपने बात को रखते हुए कहा की पश्चिमी देशो द्वारा भारत पर लगाए गए अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंध इस समस्या का समाधान नही हैं।

व्लादिमीर पुतीन का युग और भारत रूस संबंध:

व्लादिमीर पुतीन रूस की राजनीतिक व्यवस्था मे 1999 से ही प्रमुखता से अपनी भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। 2000-2008 तक वो पहली बार रूस के राष्ट्रपति बने, फिर उन्होंने अपने सहयोगी दिमित्री मेदवेदेव को 2008 से 2012 तक राष्ट्राध्यक्ष बनाया और स्वयं प्रधानमंत्री रहे। फिर रूस के संविधान मे संशोधन कर 2012-20 तक रूस के राष्ट्रपति पद पर बने हुए हैं। ऐसी संभावना दिख रही है की चीन के नेशनल पीपल कांग्रेस ने

जिस प्रकार शिनपिंग को 2018 में आजीवन राष्ट्रपति बने रहने और पद छोड़ने से पूर्व अपने उत्तराधिकारी नियुक्ति का अधिकार दिया हुआ है, उसी आधार पर रूस के संविधान में संशोधन कर 2035 तक पुतिन को राष्ट्राध्यक्ष बने रहने की व्यवस्था की जाएगी। जो भो हो यह रूस के आंतरिक राजनीतिक व्यवस्था का मामला है। जहाँ तक भारत के साथ पुतिन युग मे संबंधों का प्रश्न है, संबंधों मे सामरिक, राजनीतिक, आर्थिक, सैन्य,तकनीक, ऊर्जा, स्पेस सभी क्षेत्रो में एक गतिशीलता देखने को मिली है। 2000-2020 के बीच भारत के तीन प्रधानमंत्रियों का काल रहा है। हर दौर मे संबंधों में एक प्रगाढ़ता देखने को मिली है। पुतिन का पहला कार्यकाल अटल बिहारी वाजपेयी के समय था, जब पहली बार पुतिन का भारत दौरा वर्ष 2000 में हुआ था। भारत यात्रा के दौरान भारत और रूस के बीच सामरिक संधि पर हस्ताक्षर हुए।

2001 में वाजपेयी रूस यात्रा पर गए। पुनः 2002 में पुतीन का भारत दौरा होता है। पुतीन के वर्ष 2000 मे भारत दौरे के समय ही यह निर्णय लिया गया की आपसी संबंधों को और सुदृढ़ करने के लिए प्रत्येक वर्ष के अन्तराल पर राष्ट्राध्यक्षों का एक दूसरे देशों मे वार्षिक सम्मेलन होगा, जिससे संबंधों को और अधिक गतिशीलता प्रदान की जा सके। वर्ष 2020 तक 19 बार द्विपक्षीय राष्ट्राध्यक्ष के वार्षिक सम्मेलन हो चुके है। 2018 में संबंधों की एक नई परंपरा स्थापित करने की कोशिश की गई है, जिसे 'अनौपचारिक मीटिंग' का नाम दिया गया। जो बिना किसी एजेंडे के राष्ट्राध्यक्षों की बैठक होगी, उसकी शुरुआत हुई। रूसी शहर 'सोचि' मे प्रधानमंत्री मोदी और रूसी राष्ट्रपति पुतिन की बैठक हुई। कूटनीतिक जगत में इसे जिज्ञासा से देखा गया। अनौपचारिक बैठक के उपरांत दोनो नेताओं ने सयुंक्त प्रेस वार्ता मे 'भारत रूस संबंधों को विशेष और विशेषधिकार सामरिक संबंधों' को ओर सुदृढ़ करने की बात कही और आगे के लिए ' बदलती विश्व व्यवस्था में स्थायी साझेदारी' की बात कही। उससे पूर्व वर्ष 2000 मे भारत- रूस संबंधों के सामरिक साझेदारी को बढ़ाते हुए 2010 में भारत रूस संबंधों को विशेष और विशेषधिकार प्राप्त सामरिक साझेदारी' मे तब्दील कर दिया गया। वर्ष 2014 मे प्रधानमंत्री मोदी के आमंत्रण पर राष्ट्रपति पुतिन के भारत यात्रा के दौरान विज़न डॉक्यूमेंट की घोषणा हुई, जिसे 'दृजभ दोस्ती' (DRUZBHA-DOSTI) का नाम दिया गया। इसके पीछे मुख्य सोच ये रखी गयी की अगले दशक का भारत -रूस संबंध कैसे होंगे और कौन से क्षेत्र साझेदारी के केंद्र में होंगे। कहा गया कि संबंधों को बहुआयामी व परिणाम उन्मुख बनाने की आवश्यकता है। दोनो देश के नेताओ ने रक्षा, नाभिकीय ऊर्जा, हाइड्रोकार्बन, विज्ञान व तकनीक, व व्यापार और विनिवेश के क्षेत्रो मे कई संधियों को आगे बढाया। सोचि अनौपचारिक बैठक जो मई 2018 में हुई थी, उसके तुरंत बाद अक्टूबर 2018 मे भारत- रूस के बीच वार्षिक सम्मेलन हुए, जिसके तहत पुनः 8 प्रमुख क्षेत्रों मे समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित हुआ, जिसमे प्रमुख थे: व्यवसाय व विनिवेश, नागरिक नाभकीय ऊर्जा सहयोग,अन्तरिक्ष,परिवहन व अन्य। अप्रैल 12, 2019 को राष्ट्रपति पुतिन भारत के साथ अपने संबंधों को और अधिक मित्रतापूर्ण रूप प्रदान करने के लिए प्रधानमंत्री मोदी को रूस के '**सर्वोच्च राजकीय सम्मान**' आर्डर ऑफ सैंट एंड्रू अपोस्टल' से सम्मानित किया। कहा गया कि प्रधानमंत्री मोदी भारत- रूस विशिष्ट व विशेषाधिकार प्राप्त सामरिक संबंधों को अपने कार्यकाल मे नई ऊंचाई प्रदान की है, अतः रूस उन्हें अपने सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित करता है। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने भी रूस की यात्रा 2011 और 2013 मे किया। उनके काल मे ही 2010 में भारत रूस सामरिक संबंधों को विशेषधिकार प्राप्त संबंधों का दर्जा प्रदान किया गया। उसी दौर मे रूस द्वारा भारत-चीन-रूस त्रिपक्षीय सहयोग की बात कही गई। $20 बिलियन का व्यापार लक्ष्य रखा गया। कई अन्य रक्षा, ऊर्जा, स्पेस, सूचना प्रद्योगिकी के क्षेत्रों में सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये गए।

वर्ष 2000 से ही जब भारत रूस सामरिक संधि पर हस्ताक्षर हुए, तब से ही कुछ विशेष क्षेत्रो पर विशेषकर राजनीतिक समझदारी को द्विपक्षीय स्तर पर विकसित करने की कोशिश की गई जैसे बहुध्रुवीय विश्व की बात हो, अंतराष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राष्ट्र की सर्वोच्चता की बात हो, अमेरिका प्रभुत्व हो या विश्व व्यापार संगठन की कार्य पद्दति को लेकर दृष्टिकोण हो या एक बेहतर समन्वय कैसे स्थापित किया जाय, इन सबका प्रयास किया

गया। सुरक्षा जैसे विषय पर एक सामान्य समझ को आगे लाने की कोशिश हुई चाहे वो आतंकवाद का मुद्दा हो, मिसाइल टेक्नोलॉजी कंट्रोल रेजीम की बात हो, न्यूक्लियर सप्लाई समूह में भारत की सदस्यता को लेकर समर्थन की बात हो, कश्मीर पर सुरक्षा परिषद मे समर्थन का सवाल हो, नाटो का पूर्व की तरफ विस्तार पर रूस का पक्ष हो, चेचन्या व **दगिस्तान** के रूस से अलग होने की मांग हो ,दोनो पक्षों के विचारों में एक तारतम्यता दिखी। रक्षा क्षेत्रो में भारत की चिंताओं विशेषकर पाकिस्तान व चीन को लेकर, रक्षा सामग्री की आपूर्ति को लेकर, संयुक्त उत्पादन व तकनीक हस्तांतरण को लेकर या रूसी रक्षा उत्पादों के आधुनिकीकरण को लेकर रूस भारत के पक्ष को लेकर गंभीर रहा। वर्ष 2000 से ही रक्षा उत्पादों के विनिमयन को लेकर रूस में एक रोसेबोरोनो जैसी संस्था की स्थापना की गयी, जो रक्षा संबंधी सभी सौदों के लिए दोनो देशों के बीच की कड़ी होगी। दो अंतरसरकारी आयोग की स्थापना की गयी। एक रक्षा क्षेत्र के लिए था जिसे सैन्य व तकनीक सहयोग व दूसरा व्यापार, विनिवेश, विज्ञान,तकनीक, व सांस्कृतिक सहयोग को लेकर है। यही दोनों संस्थायें मुख्य रूप से भारत रूस संबंधों को नियमित करने का कार्य पिछले दो दशकों से कर रही है। अन्य दो क्षेत्र जहाँ संबंधों को ओर सुदृढ़ करने की कोशिश हो रही है, वो है अर्थ व व्यापार , विज्ञान व तकनीक। सांस्कृतिक स्तर पर भारत -रूस संबंध प्रारंभ से ही काफी मधुर रहे है और सोवियत संघ के विखंडन के उपरांत भी संबंधों की मधुरता कायम है।

भारत रूस रक्षा सहयोग:

भारत रूस रक्षा सहयोग, वर्तमान भारत रूस संबंधों को धुरी रहा है।पिछले तीन दशको में यही एक क्षेत्र रहा है जहाँ भारत- रूस सहयोग का विस्तार ही हुआ है।

भारत रूस रक्षा संबंध विक्रेता-क्रेता संबंधो से आगे बढ़ते हुए संयुक्त अनुसंधान, विकास,और उत्पादन की और बढ़ चुका है। 1992 के समझौते द्वारा अंतरसरकारी सैन्य तकनीक संस्था रक्षा क्षेत्रों को ओर आगे बढ़ा रही है। ब्रह्मोस मिसाईल व su30 एयरक्राफ्ट , T-90 टैंक का आज संयुक्त उत्पादन भारत मे रूस के सहयोग से हो रहा है। 17वे वार्षिक सम्मेलन में अमेरिकी दवाब को दरकिनार करते हुए S-400 एयर मिसाइल सिस्टम को भारत को देने की रूस ने करार किया है, जिसे अमेरिका अंतरराष्ट्रीय मिसाइल टेक्नोलॉजी हस्तांतरण का उल्लघंन मानता है, और भारत और रूस पर प्रतिबंध लगाने की धमकी दे रहा है। 19वी वार्षिक बैठक मे अमेठी में AK सीरीज के राइफल के संयंत्र लगाने की घोषणा हुई है। सयुंक्त सैण्य अभ्यास भारत- रूस रक्षा सहयोग का एक आधारस्तंभ बन चुका है।2017 में 'इंदिरा 2017' के नाम से एक संयुक्त नाभिकीय सैण्य अभ्यास तीनों सेनाओ को मिलकर बंगाल की खाड़ी मे किया गया। यद्यपि वर्ष 2000 से ही भारत अपनी सैन्य आयात के क्षेत्रो में विवधता लाना चाहता था, लेकिन इसका परिणाम 2010 के बाद ज्यादा देखने को मिला। वर्ष 2000 तक भारत द्वारा थल सेना के 70 प्रतिशत, वायु के 80 प्रतिशत, व नाभकीय के 90 प्रतिशत सैन्य संसाधनों के लिये रूस पर निर्भर रहता था, लेकिन पिछले पांच वर्षो मे यह परिवर्तन स्पष्ट दिखने लगा है। यद्यपि रूस अभी भी भारत के सैन्य सामग्री देने वाला सबसे बड़ा देश है, लेकिन 2014-18 के बीच भारत रूस के रक्षा क्षेत्रों में भारत द्वारा आयातित अस्त्र शस्त्र की निर्भरता में 42 प्रतिशत तक की कमी आयी है। अमेरिका और इजराइल भारत के रक्षा सामग्री मुहैय्या कराने वाला बड़े व्यापारिक देश के रूप मे उभरें है। फिर भी रूस अभी भी 58 प्रतिशत से अधिक भारतीय सैन्य रक्षा उपकरणों को मुहय्या कराने वाला देश है।वर्ष 2007 में दोनो देशों द्वारा फिफ्थ जेनरेशन SU 57 फाइटर के लिये गए समझौतें से भारत ने अपने आपको अलग कर लिया है, क्योकि रूस द्वारा इसे विकसित करने में अनावश्यक विलंब हुआ, जब विकसित हुई भी तो अमेरिका या अन्य देशों के फाइटर एयरक्राफ्ट से वह तकनीकी रूप से कमजोर निकली।इधर कुछ कारक है जिसके कारण दो नैसर्गिक मित्र राष्ट्रों को दो दिशाओ में आगे बढ़ना पड़ रहा है- जैसे कि भारत -अमेरिका बढ़ते रक्षा सहयोग,वह अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियां जिसमे अमेरिका- चीन प्रतिद्वंदिता चल रहीं है इसके साथ ही चीन का भारत के प्रति बर्ताव और अमेरिका की रूस से

तनातनी । रूस चीन को छोड़ नही सकता क्योकि वह सबसे बड़ा व्यापारिक व रक्षा उत्पाद ख़रीददार देश है, वही भारत चीन के प्रति अपने संशयों को समाप्त नही कर सकता। अतः दोनो देश अपने अपने राष्ट्रीय हितों के अनुसार आगे बढ़ रहे है।

भारत-रूस आर्थिक व व्यापारिक संबंध:

प्रारम्भ के दो वर्षो को छोड़ दिया जाय तो शुरू से ही भारत और रूस के शीर्ष नेतृत्व का यह प्रयास रहा है कि दोनो पक्षों के बीच आर्थिक व व्यापारिक संबंधों को और गतिशीलता प्रदान की जाएं । दोनो देश इस बात से पूर्ण रूप से भिज्ञ है की वर्तमान विश्व व्यवस्था में आर्थिक साझेदारी सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।विश्व के कुछ गिने चुने ट्रिलियन डॉलर की इकॉनमी मे अमेरिका, यूरोपियन यूनियन के बाद सोवियत संघ के पास ही यह हैसियत प्राप्त थी। लेकिन आज रूस विश्व की 10 बड़ी अर्थव्यवस्था में भी अपना स्थान नही बना पा रहा है। जहाँ भारत विश्व अर्थव्यवस्था में आज 5वी पॉयदान पर है, और आने वाले समय में तीसरे स्थान के लिए संघर्षरत है। वही रूस 12वें स्थान पर कायम है, और विश्व की 20 बड़ी अर्थव्यवस्था में बने रहने की जद्दोजहद कर रहा है। भारत-रूस सयुंक्त प्रयास के बाद भी जहाँ अमेरिका और चीन के साथ भारत के आर्थिक व व्यापारिक संबंध $70 बिलियन से लेकर$100 बिलियन के बीच लगातार पिछले पाँच वर्षो से चला आ रहा है, वही भारत -रूस द्वारा अपने लक्ष्यों के निरंतर परिवर्तन के बावजूद भी व्यापारिक संबंध $10 से 15 बिलियन के बीच ही सीमित रहा है। वर्ष 2018-19 मे दोनो देशों ने द्विपक्षीय व्यापार का लक्ष्य जो वर्ष 2015-16 मे वर्ष 2025 के लिए अमेरिकी डॉलर 25 बिलियन रखा था, और द्विपक्षीय विनिवेश का लक्ष्य $30 बिलियन रखा था, उसे बढ़ाकर अब व्यापार के लिए अमेरिकी डॉलर 30 बिलियन और विनिवेश के लिए अमेरिकी डॉलर 50 बिलियन रखा है। 2018 मे ही सोचि अनौपचारिक बैठक और वार्षिक सम्मेलन के बाद नवंबर में दोनो पक्षों के बीच आर्थिक व व्यापारिक संबंधों को बढ़ाने के लिए पहली 'भारत- रूस सामरिक आर्थिक वार्ता' का आयोजन सेंट पीटर्सबर्ग मे हुआ जिसमे भारत की तरफ से नीति आयोग के उपाध्यक्ष नेतृत्व कर रहे थे, वही रूसी दल का नेतृत्व वहाँ के आर्थिक मामलों के मंत्री के हाथों था। इस बैठक में कुछ विशेष क्षेत्रों को चिन्हित किया गया है, जहाँ व्यापारिक व विनिवेश की संभावनाओं को बढ़ाया जा सकता है। ये क्षेत्र है : आवागमन आधारिक संरचनाओं के विकास, कृषि व कृषि आधारित उत्पादक क्षेत्र, छोटे और मध्यम व्यावसायिक संस्थान, डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन, और फ्रंटियर टेक्नोलॉजी, एवं औद्योगिक व व्यापार संबंध। ये ऐसे क्षेत्र है जहाँ भारत मे विनिवेश की अपार संभावनाए हैं। सड़क परिवहन मार्गों का निर्माण भारत मे लगातार हो रहा है, यहाँ विनिवेश की अपार संभावनाएं है। ये ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ भारत रूस के बीच अभी बहुत सीमित स्तर पर व्यापारिक व आर्थिक संबंध रहें है। यदि वर्ष 2018 का आंकड़ा देखा जाय तो रूस से भारत द्वारा आयातित समान प्रमुख रूप से, नाभिकीय ऊर्जा से संबंधित सामग्री जैसे बायलर,मशीनरी और मैकेनिकल एप्लायंसेज, मिनरल फ्यूल्स, बहुमुल्य हीरे और पत्थर, इलेक्ट्रिकल मशीनरी, उर्वरक आदि रहे है। वही रूस द्वारा भारत से आयतित सामग्री मुख्य रूप से फार्मास्युटिकल्स उत्पाद, इलेक्ट्रॉनिक मशीनरी, आयरन और स्टिल,क्लोथिंग, कॉफी, चायपत्ती, मशाला, तम्बाकू, वेहिकल्स, व अन्य खाद्य पदार्थ रहें हैं। मुख्य तीन क्षेत्रों को चिन्हित किया जाय तो भारत रूस से मिनरल प्रोडक्ट,बहुमूल्य रत्न,और रासायनिक पदार्थ आयतित करता है, वही रूस भारत से रासायनिक उत्पाद, इंजीनियरिंग गुड्स और कृषि उत्पाद आयतित करता है। व्यापार और विनिवेश को सरल करने के लिए दोनो देश 'ग्रीन कॉरिडोर' को निर्मित करने के पक्षधर है। 1990 के दिसम्बर में सोवियत संघ के अस्तित्व के समाप्त होते ही, भारत,- सोवियत संघ के बीच जो व्यापारिक समझौता था, जिसके तहत वस्तु विनिमयन के द्वारा वाणिज्यिक व्यवस्था को बढ़ाया जाता था, वो भी रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया की देख रेख में, वो खत्म हो गया। मूल रूप से सोवियत काल मे आर्थिक विनिमय का आधार दोनो पक्षों के सहमति से रुपया रूबल परिवर्तनीयता के आधार पर था, लेकिन देनदारी की भुगतान वस्तु विनमय के माध्यम से होता था। सोवियत संघ के पतन के साथ ही जो स्टील, लौह अयस्क, कोयला,तेल, मैनुफैक्चरिंग

*Corresponding Author: **डॉ सीमा दास**

क्षेत्रों में जो सहयोग चल रहा था वो भी ठप्प हो गयें। क्यो कि विनिमयन के स्वरूप बदल गयें। 1972 के तर्ज पर भारत सोवियत संयुक्त आयोग की जगह अंतरसरकारी आयोग व्यापार, अर्थव्यवस्था, विज्ञान, संस्कृति के लिए 4 मई 1992 को स्थापित की गई। 4मई 1992 के समझौते को ही आधार मान दोनो पक्षों के बीच व्यापार व आर्थिक संबंधों का संचालन प्रारम्भ हुआ। रूस की बिखरती अर्थव्यवस्था ने 1990 के दशक में रक्षा व हाइड्रोकार्बन क्षेत्रों को छोड़, अन्य क्षेत्रो में सहयोग को सीमित कर रखा था। रूस की अर्थव्यवस्था1990-96 तक नकरात्मक ग्रोथ दे रही थी, पहली बार 1997 मे 0,.9 प्रतिशत का सकरात्मक वृद्धि दर 1997 में देखने को मिला। वो पुनः 1998 के आर्थिक संकट ने नकरात्मक वृद्धि दर मे तब्दील कर दिया। 1999 से लेकर 2007 तक रूस पहली बार लगातार 7 वर्षों तक सकारात्मक आर्थिक वृद्धि दर को प्राप्त किया। भारत के साथ भी इसके व्यापारिक व आर्थिक संबंध रूस के आर्थिक विकास के साथ ही बढ़ते गए। लेकिन जो व्यापारिक वृद्धि दर वर्ष 2000-10 के बीच दिखी वो दर 2010 से 20 के बीच नही दिखाई दिया। उदाहरण के तौर पर वर्ष 2000 मे भारत रूस आर्थिक व व्यापारिक संबंध अमेरिकन $1.57 थी, वो बढ़कर 2010 में $8.5 बिलियन हो गए। 2007 मे तो $10 बिलियन का आंकड़ा को पार कर गया। लेकिन 2010 से लेकर 2020 तक के सफर को देखें तो संबंधों मे राजनीतिक पुट अधिक दिखता हैं । आर्थिक व व्यापारिक विनिवेश के लिये देखें तो वर्ष 2011 मे भारत रूस के बीच व्यापारिक संबंध $8.9 बिलियन थे जो 2018 मे $ 10.96 और 2019 के जनवरी से लेकर सिंतबर तक $7.55 बिलियन का ही रहा है। जबकि 2015 के लिये लक्ष्य $20 ,बिलियन का था, परन्तु उपलब्धि केवल$7.83 बिलियन का रहा। वही अमेरिका के साथ व्यापारिक संबंध66.2 बिलियन और चीन के साथ $68,1 बिलियन डॉलर का रहा। यदि 2016-17 के आंकड़े को देखे तो चीन और अमेरिका की तुलना में भारत रूस आर्थिक संबंध नगण्य मात्र दिखते है। 2016 में $ 7.71 बिलियन और 2017 मे $ 10.71 बिलियन, वही चीन और अमेरिका के साथ $69.5 व $67.7बिलियन वर्ष 2016 मे, और वर्ष 2017 मे ये बढ़कर $84.5 और $74.3 बिलियन डॉलर हो गया था। ऐसा नही की रूस के आर्थिक संबंध सभी देशो के साथ भारत की तरह कम हो रहे है। यदि चीन और रूस के आर्थिक संबंधों को देखा जायें तो इन्ही वर्षो मे $ 100 बिलियन से अधिक के रहे हैं। विनिवेश के क्षेत्र में लक्ष्य से बेहतर परिणाम देखने को मिले है, $30 बिलियन का लक्ष्य सात साल पूर्व ही प्राप्त कर लिया गया, अतः लक्ष्य को पुनर्निधारण करते हुए 2025 तक $ 50 बिलियन का रखा गया है।

भारत रूस नाभकीय ऊर्जा, विज्ञान व तकनीक, अंतरिक्ष सांस्कृतिक व अन्य क्षेत्रों में संबंध: भारत रूस 20वां वार्षिक सम्मेलन जिसे हम व्लादिवोस्टोक घोषणा पत्र के रूप मे जानते हैं, भारत रूस नाभकीय ऊर्जा के क्षेत्र की दिशा में एक अहम कदम है। रूस के राष्ट्रपति पुतिन ने यह घोषणा की कोंडकुलम नाभिकीय विद्युत सयंत्र के अलावा भारत मे 2032 तक रूस 20 ओर नाभिकीय सयंत्र को लगाने में भारत का सहयोग करेगा। इतना ही नही नाभिकीय ऊर्जा के क्षेत्र में भारत और रूस मिलकर तीसरे देशों में नाभिकीय विद्युत सयंत्र की स्थापना में सहयोग करेगा। अफ्रीका, मध्य एशिया, और दक्षिण एशिया के देशों को विशेषकर इस जॉइंट वेंचर के लिए केंद्रित किया है। बांग्लादेश का रूपर विद्युत सयंत्र जो पाबना जिलें मे है, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। कोंडकुलम विद्युत सयंत्र की स्थापना के लिए भारत और रूस ने 1988 में ही समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया था। 2008 के भारत अमेरिका नागरिक नाभकीय समझौतें के बाद भारत-रूस के बीच अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नए स्तर पर सहयोग देखने को मिला। 2009 में अमेरिका के तर्ज पर ही भारत रूस नागरिक नाभकीय समझौता हुआ जो भारत को यूरेनियम की आपूर्ति बिना किसी व्यवधान के और अन्य तकनीकी सहायता व अंतरराष्ट्रीय सहयोग के ज्ञापन पर सहमति हुई। 2010 के पुतिन दौरें मे रूस द्वारा 16 नए नाभिकीय विद्युत सयंत्र की स्थापना की बात कही गई। रूसी नाभकीय ऊर्जा की सर्वोच्च संस्थान रोसेतोम और भारत के आणविक अनुसंधान संस्थाओं के बीच लगातार सहयोग कायम है।

*Corresponding Author: **डॉ सीमा दास**

हाइड्रोकार्बन ऊर्जा के क्षेत्र में बढ़ता सहयोग दोनो देशो के बीच अर्थिक व विनिवेश के क्षेत्रों में एक नयी ऊर्जा का संचरण किया है।अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा संस्थान का मानना है की 2020 तक भारत में 5.5 मिलियन बैरल प्रति दिन हाइड्रोकार्बन की खपत होगी। रूस के लिए ये बहुत बड़ा अवसर होगा। भरतीय कंपनियों ने भी इस क्षेत्र मे विनिवेश किया है, विशेषकर सरकारी कंपनी ओएनजीसी, भारत पेट्रोलियम, इंडियन ऑयल प्रमुख है। ओएनजीसी विदेश निगम ने सखालिन के एक प्रोजेक्ट मे 20 प्रतिशत की हिस्सेदारी खरीदी है। उसी प्रकार वेनकोरनेफ्ट मे 24 प्रतिशत के आसपास और टास युर्यकस में 30 प्रतिशत की हिस्सेदारी भारतीय कंपनीयो ने सुनिश्चित की है।

सांस्कृतिक संबंध:

भारत-रूस सांस्कृतिक संबंधों का इतिहास सोवियत काल के पूर्व समय से ही है।अफ़नासाय निकितिन पहले रूसी थे जो भारत 15वी शताब्दी मे आये थे और तीन वर्ष तक यहाँ प्रवास का वर्णन अपनी पुस्तक ' ऐ जर्नी बियॉन्ड थ्री सीज' (A journey beyond three seas) में किया है। 'द इंडो सोवियत कल्चरल सोसाइटी' की स्थापना 1952 मे हुई जिसे नेहरू द्वारा 1941 मे स्थापित 'फ्रेंड्स ऑफ सोवियत यूनियन' के उत्तराधिकारी संस्था के रूप मे देखा गया। द जर्नल सोवियत लैंड भारत मे आठ भरतीय भाषाओ मे 1951 से ही प्रकाशित हो रहा है। इसके अलावा अकादमिक और सांस्कृतिक स्तर पर दोनो देशो के बीच आदान प्रदान व्यापक स्तर पर चलते रहता है। हिंदुस्तानी समाज भारतीय द्वारा स्थापित सबसे पुरानी संस्था है, जिसे 1957 मे बनाया गया था। वर्तमान में भी 15000 से अधिक भारतीय रूस में है , जिसमे 5000 के आसपास छात्र रूस मे मेडीकल व अन्य तकनीकी की पढ़ाई कर रहें है। यद्यपि सोवियत संघ के विघटन के बाद सांस्कृतिक संबंधों मे थोड़ा ठहराव आया है, उसका सबसे बड़ा कारण दोनो सरकारों द्वारा वित्तीय सहयोग को कम कर देना रहा है। बॉलीवुड सिनेमा, योगा, और भारतीय रेस्तरां रूसी शहरों में लोकप्रिय है, लेकिन भारतीय शहरों में रूसी संस्कृति का उतना प्रभाव नही बन पाया। द रसियन सेन्टर फ़ॉर साइंस एंड कल्चर जो पांच प्रमुख भारतीय शहरों में देखा जा सकता है, उनके द्वारा ही कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रम कराए जाते रहे है। 2018-19 मे सांस्कृतिक सहयोग को बढ़ाने के लिए इंडियन कॉउन्सिल फ़ॉर कल्चरल रिलेशन्स और रूसी मंत्रालय के संस्था रोसकॉन्सेर्ट के बीच एक समझौता ज्ञापन हुआ है, जिसके तहत दोनो देशों के संस्कृति से जुड़े लोगों को एक दूसरे देश में एक वर्ष के अन्तराल पर भेजा जाएगा। पिछले वर्षों मे 'फेस्टिवल ऑफ इंडिया' 'डेज ऑफ इंडियन कल्चर' जैसे कार्यक्रमों को प्रोत्साहित किया गया है, ताकि दोनो देशों के बीच और मधुर संबंध स्थापित हो सके।

निष्कर्ष:

भारत-रूस के लिए उत्तर शीतकाल आर्थिक व राजनीतिक समन्वय की चुनौती से भरा हुआ दौर रहा है। रूस आर्थिक दृष्टिकोण से सोवियत संघ की तरह ताक़तपूर्ण नही रहा, न ही राजनीतिक रूप से विश्व स्तर पर उतनी महत्ता रही। प्रारम्भिक दशकों में रूस की लचर राजनीतिक व आर्थिक व्यवस्था, उसकी नीतिगत निरंतरता पर प्रश्नचिन्ह लगा रहे थें, वही वर्तमान दौर चीन- अमेरिका प्रतिद्वंदीता उसे भारत से दूर खड़ा कर रहा है। यद्यपि एस 400 एन्टी एयर मिसाइल डिफेंस सिस्टम पर सहमति वो भी अमेरिकन कानून कॉउंटरिंग एडवर्सएरीज थ्रू सैंक्शन एक्ट को दरकिनार करते भारत -रूस के स्वतंत्र विदेश नीति का परिचायक है। लेकिन उभरती विश्व व्यवस्था जहाँ अमेरिका भारत का आर्थिक व सामरिक दृष्टि से सबसे बडा साझेदार के रूप मे पिछले कुछ वर्षों से उभर रहा है, वही रूस और चीन की रक्षा व आर्थिक क्षेत्रों मे सहयोग भारत की तुलना मे कई गुणा ज्यादा है। पिछले दस वर्षों मे भारत-रूस के आर्थिक सहयोग $10 बिलियन के आसपास ही सिमट कर रह जा रही है, वही चीन $110 बिलियन डॉलर का व्यापारिक सहयोगी हो चुका है।स्वाभाविक रूप से रूस अपने सबसे बड़े व्यापारिक व रक्षा उपकरणों के ख़रीद करने वाले को नाराज नही कर सकता। विशेषकर क्रीमिया संकट के बाद पश्चिम का सख्त रुख और कोविड-19 के बाद चीन के प्रति अमेरिकी सख़्ती दोनो देशों को वैश्विक स्तर पर

और करीब ला रहा है। रूस अवश्य ये चाहता है की पश्चिम के साथ संबंधों की कड़वाहट और चीन के साथ भारत के बनते बिगड़ते रिश्तों का भारत -रूस संबंध पर दीर्घकालिक असर न हो। भारत की विदेश नीति भी अपनी सामरिक व सुरक्षा को ध्यान मे रखते हुए कभी यह नही चाहेगी कि उसका अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सबसे विश्वसनीय सहयोगी उसके सम्भावित विरोधी गुट में शामिल हो जायें।

संदर्भ ग्रंथ-सुची:

रिपोर्ट ऑफ द इंडिया रसीया जॉइंट स्टडी ग्रुप, मॉस्को- नई दिल्ली, 2007

मेमोरेंडम ऑफ गवर्नमेंट ऑफ रुस्सियन फेडरेशन एंड गवर्नमेंट ऑफ इंडिया

विदेश मन्त्रालय के वेबसाइट

वाणिज्य मंत्रालय के वेबसाइट

द वर्ल्ड बैंक एनुअल रिपोर्ट

वर्ल्ड इकनोमिक एंड सोशल सर्वे

वर्ल्ड इन्वेस्टमेंट रिपोर्ट

द यूरोप वर्ल्ड ईयर बुक

यूरोपियन ईटेलीजेंस रिपोर्ट

https://indianembassy-moscow.gov.in/india-russia-defence-cooperation.php
https://indianembassy-moscow.gov.in/70-years-of-india-russia-relations-a-historic-milestone.php
EOI Moscow website: https://www.indianembassy-moscow.gov.in
https://www.mea.gov.in/Portal/ForeignRelation/India_Russia_Bilateral_Brief_sep_2019.pdf
https://thediplomat.com/2017/06/india-russia-sign-military-cooperation-roadmap/

बौकर, माइक(1997), रसीयन फॉरेन पालिसी एंड द एन्ड ऑफ द कोल्ड वॉर एरा, अलदेरषोत, देरमौथ लिमिटेड, पृष्ठ संख्या: 64-80.

शेरमन, पीटर (एडिटेड,1995), रसीयन फॉरेन पालिसी सींस सेकंड वर्ल्ड वॉर, ऑक्सफोर्ड, वेस्ट व्यू प्रेस, पृष्ठ संख्या, 12-25

एसलुंड, एंडर्स(1995), हाऊ रुसिया बेकम मार्केट इकॉनमी, वाशिंगटन, ब्रूकिंग्स इंस्टीट्यूट,पृष्ठ संख्या: 52-80.

ब्राउन, आर्ची(1996) गोर्बाचेव फैक्टर, न्यू यॉर्क, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

ट्रोफिनेन्को, हेनरी(1999) रुस्सियन नेशनल इंटरेस्ट एंड द करंट क्राइसिस इन रुसिया,सिडनी, अशगते

शमसुद्दीन(एडिटेड,2001) इंडिया एंड रसिया टुवर्ड्स स्ट्रेटिजीके पार्टनरशीप, नई दिल्ली

रैतज़र,जॉर्ज एंड डीन,पॉल(एडिटेड,2015), ग्लोबलाइजेशन अ बेसिक टेक्स्ट, ब्लैकविल पब्लिकेशन,पृष्ठ संख्या: 75-90.

रोगोव, सेर्गेई,' रुसिया एंड यूनाइटेड स्टेट्स अतः द थ्रेसहोल्ड ऑफ द ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी', रुस्सियन सोशल साइंस रिव्यु, वॉल्यूम 40, नंबर 3, मई जून 1999, पेज न.12-49.

अर्बातोव,अलेक्सए जी(1993), "रसीयन फॉरेन पालिसी अल्टरनेटिवस",इंटरनेशनल सेक्यूरिटी, वॉल्यूम, 18, नम्बर,3, पृष्ठ संख्या,8-11.

ख़रीपुनोव, इगोर व श्रीवास्तव, अनुपम, रुस्सियन इंडिया रिलेशन्स:अलायन्स ओर पार्टनरशीप, कम्पेरेटिव स्ट्रेटिजी, 1999 वोल्युम 18, पृष्ठ संख्या,153-71

एलमान, माएकल, 'मल्टिपल कॉसेस ऑफ कॉलेप्स', REF/RL रिपोर्ट, पृष्ठ संख्या, 55-57.

कपूर, निवेदिता(2019),इंडिया रसिया रिलेशन्स इन चेंजिंग वर्ल्ड आर्डर:इन परसुइट ऑफ आ स्पेशल स्ट्रेटेजिक पार्टनरशीप, ओआरऐफ़ ओकशनल पेपर

(2019) इंडिया रसिया रिलेशन्स बियॉन्ड एनर्जी एंड डिफेंस,ओआरऐफ़ ओकशनल पेपर

फोशको, कैथरीन, रीं एनेरगिसिंग द इंडिया रुसिया रिलेशनशिप, गेटवे हाउस रिसर्च पेपर, 2011

रिसर्जेंट रशिया, द वाशिंगटन क्वाटर्ली, स्प्रिंग 2007, पृष्ठ संख्या, 95-155.